पंजीकरण-प्रपत्र

द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
तुलसीदास का सामाजिक चिन्तन

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा का संयुक्त आयोजन

28-29 दिसम्बर, 2019

नाम :.....

पद नाम :.....

संस्था का नाम :.....

पत्र–व्यवहार का पता :.....

.....

.....

दूरभाष नं. :.....

ई–मेल .....

पं.शुल्क : रू..... दिनांक :.....

शोध–पत्र का शीर्षक:.....

.....

.....

दिनांक :.....

स्थान :.....

हस्ताक्षर

संरक्षक

प्रो. राजाराम शुक्ल
कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

परामर्श समिति

प्रो. रामपूजन पाण्डेय
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रो. जितेन्द्र कुमार
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रो. रमेश प्रसाद
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रो. शैलेश कुमार मिश्र
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

संयोजक
डॉ. विद्या कुमारी चन्द्रा
असि.प्रो. (हिन्दी)
आधुनिक भाषा एवं भाषा विज्ञान विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
सम्पर्क सूत्र– 7985317844

अध्यक्ष
प्रो. कृष्णचन्द्र दुबे
आधुनिक भाषा एवं भाषा विज्ञान विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
सम्पर्क सूत्र– 9450633238

संयोजक

डॉ0 विद्या कुमारी चन्द्रा
आधुनिक भाषा एवं भाषा विज्ञान विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी–221002 (उ.प्र.)
सम्पर्क सूत्र : 9453037735, 9118100257
9794810571, 9452197750
ई–मेल : tulsidasssvv2019@gmail.com

नोट- इच्छुक अभ्यर्थी अपना रजिस्ट्रेशन भाषा विज्ञान विभाग में भी करवा सकते हैं।

द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
तुलसीदास का सामाजिक चिन्तन

28–29 दिसम्बर, 2019

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी–221002 (उ0प्र0)

आयोजकः
आधुनिक भाषा एवं भाषा विज्ञान विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी–221002 (उ.प्र.)

तुलसीदास का सामाजिक चिन्तन

भारतीय महापुरुषों में अग्रगण्य गोस्वामी तुलसीदास भारतीय समाज और संस्कृति के जहाँ एक ओर उन्नायक हैं वहीं दूसरी ओर समाज सुधारक भी हैं। तुलसीदास का साहित्य लोकमंगल, रामानता और विश्वबन्धुत्व की भावना पर केन्द्रित है। विशेष रूप रो 'रामचरितमानस' उनका एक ऐसा महाकाव्य है; तुलसीदास ने रामरितमानस में व्यक्ति, परिवार, समाज तीनों आदर्शों का व्यवहारिक विवेचन प्रस्तुत किया है। उनके राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, जो हमारे समाज को प्रतिबिम्बित करते हैं। इस ग्रंथ से समाज को प्रेरणा और मार्गदर्शन दोनों प्राप्त होता है। तुलसीदास के 'मानस' में भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल आदर्शों की अभिव्यक्ति है। समाज के हित को केन्द्र में रखते हुए तुलसी एक आदर्श और स्वस्थ समाज की स्थापना करना चाहते थे, जिसमें मानवीयता हो, आपसी भाईचारा हो और समाज का यह परिवर्तन क्षणिक न होकर शाश्वत हो। तुलसीदास कविता को मनोरंजन नहीं बल्कि लोकहित का साधन मानते हैं। तुलसीदास की दृष्टि में वही कार्य श्रेष्ठ है जिससे समाज का हित हो; वो कहते है– कि

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।
राम सुकीरति भनिति भदेसा।
असमंजस अस मोहि अँदेसा।।

तुलसी ने एक हद तक समन्वय का मार्ग अपनाया है, समन्वय के साथ समझौते का नहीं । उन्हें जहाँ कहीं और जिस किसी भी रूप में लोक–जीवन का अमंगल करने वाली प्रवृत्ति दिखाई दी, उसका उन्होंने डटकर विरोध भी किया है, वहाँ वह थोड़ा भी नहीं चूके हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी भी तुलसी को लोकनायक की संज्ञा देते हैं – इसी समन्वय की विशेषता के कारण वह तुलसी के काव्य में समाजवाद की प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हुए कहते है कि ''लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके, क्योंकि भारतीय जनता मे नाना प्रकार की परस्पर विरोधी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ, आचार, निष्ठा और विचार पद्धतियाँ प्रचलित है। तुलसी का सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृति का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय है। 'रामचरितमानस' शुरू से अंत तक सामाजिक एवं समन्वय काव्य है।''

समाज की विचारधारा को सशक्त बनाने के लिए तुलसी ने अपने युग की परिस्थितियों का गंभीर मनन किया। जहाँ–जहाँ धर्म के नाम पर अनेक सम्प्रदायों में आडम्बर, अनाचार, जटिलता, पुरोहितवाद जैसी कुरीतियाँ पनप रही थीं वहाँ भी तुलसी ने विषमता को समाप्त करने के लिए समाजवाद को अपनाया तथा मानस में सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दोनों पक्षों का ध्यान रखा है। उनका मानना है कि–

जब जब होई धर्म कै हानि।
बाढ़हि असुर–अधम अभिमानी।।
तब तब प्रभु धरि मनुज सरीरा।
हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा।।

तुलसीदास जी के इन्हीं विचारों को केन्द्र में रखकर यह द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित है, जिसमें उनके वाङ्मय के विविध आयामों पर अंतर्राष्ट्रीय विद्वान विमर्श करेंगें।

संगोष्ठी के उप विषय

1. राष्ट्रीय धरोहर के संरक्षण में मानस की भूमिका
2. गोस्वामी तुलसीदास की दृष्टि–''बहुजनहिताय बहुजनसुखाय''
3. गोस्वामी तुलसीदास के काव्य में सामाजिक सम्बन्धों का आदर्श रूप
4. तुलसी–साहित्य में प्रकृति और सौन्दर्य
5. साहित्य और संस्कार में तुलसी का महत्व
6. तुलसी साहित्य में कल्पना और महत्व
7. आधुनिक सन्दर्भ में रामचरित मानस की प्रासंगिकता
8. गोस्वामी तुलसीदास का लोकशास्त्र एवं वेद मर्यादा

शोधपत्र-आमन्त्रण

प्रतिभागीगण सम्बन्धित विषय पर शोधपत्र संस्कृत, हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में भेज सकते हैं। संस्कृत अथवा हिन्दी में लिखे शोधपत्र Kruti dev-10 फॉण्ट साइज 14 तथा अंग्रेजी में लिखे शोधपत्र Times New Roman फॉण्ट साइज 12 में एम.एस. वर्ड में टाइप कराकर सी.डी. सहित भेजें। शोधपत्र सारांश 300 शब्दों में अथवा पूर्ण शोधपत्र कम से कम 3000 शब्दों में 10 दिसम्बर 2019 तक अवश्य प्रेषित करें।

पंजीकरण-शुल्क

अध्यापक	रू. 1000/–
शोधार्थी	रू. 600/–

पंजीकरण–प्रपत्र इस निमन्त्रण –पत्र के साथ संलग्न है। स्थानीय प्रतिभागीगण से अनुरोध है कि पंजीकरण हेतु पूरित प्रपत्र के साथ पंजीकरण शुल्क स्वयं आधुनिक भाषा एंव भाषाविज्ञान विभाग में नगद जमा करें। वाराणसी से बाहर के प्रतिभागीगण ई–मेल tulsidasssvv2019@gmail.com पर पंजीकरण की अग्रिम सूचना भेजने का कष्ट करें।

आयोजन-स्थल

आधुनिक भाषा एवं भाषा विज्ञान विभाग
पाणिनि भवन सभागार
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी-221002 (उ.प्र.)

विशेषः- इस प्रपत्र की फोटो कॉपी भी मान्य होगी। संयुक्त शोधपत्र की स्थिति में अलग-अलग शुल्क देय होगा।